1st Choice

Page No.
Date / /

# गौतमी बलश्री का नासिक गुहा लेख

गौतमी बल श्री का नासिक गुहालेख सातवाहन शासक गौतमी पुत्र शातकर्णी के पुत्र वशिष्ठी पुत्र पुलमावि के शासन काल के 19 वें वर्ष मे लिखवाया गया था। यह गुहालेख नासिक (महाराष्ट्र) की गुफा सं. 3 के बरामदे की पिछली दिवार के प्रवेश द्वार के ऊपर खुदा हुआ है। इसकी तिथि लगभग 149 ई. होगी। (11 पंक्तियाँ) (भाषा प्राकृत लिपि ब्राह्मी) इस गुहालेख को सर्वप्रथम "जर्नल ऑफ बॉम्बे ब्रान्च ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसायटी" के 7 वे अंक मे छपा था बाद मे ब्यूलर ने इसका अनुवाद "आर्कियोलॉजीकल सर्वे ऑफ वेस्टर्न इण्डिया" मे छापा गौतमी बल श्री का नासिक गुहालेख सातवाहन काल के इतिहास जानने मे महत्वपूर्ण है। इस गुहालेख से हमे सातवाहन काल की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है जो निम्न प्रकार है----

(1) राजनैतिक महत्व :- गौतमी बल श्री का नासिक गुहालेख राजनैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस लेख से हमे सातवाहन काल के इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है जो निम्न है---

(A) सातवाहनो की जाति

(B) गौतमी पुत्र शातकर्णी की सफलताएँ

(C) गौतमी पुत्र की साम्राज्यिक सीमाएँ -

Scanned by CamScanner

(A) सातवाहनों की जाति :- गौतमी बलश्री का नासिक गुहा लेख राजनैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह अभिलेख सातवाहनों की उत्पत्ति पर प्रकाश डालने वाला यह एक मात्र अभिलेख है इससे यह पता चलता है कि सातवाहन जाति से ब्राह्मण थे। इस लेख मे गौतमी पुत्र शातकर्णी को "एक बम्हण" = (अप्रतिम ब्राह्मण) कहा गया है। तथा उसे क्षत्रियो का दर्प व मान का मर्दन करने वाला (खतिय-दप-मान-मदनस) बताया गया है। अतः हेमचन्द्र राय चौधरी इस के आधार सातवाहन नरेश को ब्राह्मण मानते है।

गौतमी बलश्री अपने को 'राजर्षिवधु' कहती है। राजर्षिवधु शब्द का प्रयोग ब्राह्मण राजा की पत्नि के लिए अर्थयुक्त था। लेकिन गौतमीबलश्री को उसके पति के ब्राह्मण होने पर भी 'ब्रह्मर्षि वधु' कहना उचित नही लेकिन (राय चौधरी सातवाहन को ब्राह्मण मानते है।)

अतः इस प्रकार इस गुहा लेख से सातवाहन की जाति का ज्ञान होता है।

(B) गौतमी पुत्र शातकर्णी की सफलताएँ :- इस अभिलेख का सर्वाधिक महत्व गौतमी पुत्र शातकर्णी के शासनकाल की पुनर्निर्माण की दृष्टि से है। गौतमीपुत्र शातकर्णी के शासन-काल से पूर्व सातवाहन साम्राज्य अवनति के लम्बे दौर से गुजर चुका था इसका प्रमुख कारण नहपान के

नेतृत्व में क्षहरात शकों का उत्कर्ष था। गौतमी पुत्र शातकर्णी के 18 वे वर्ष के नासिक अभिलेख से प्रमाणित है कि शातकर्णी ने नहपान के दामाद व नासिक व पूना प्रदेशो के गवर्नर उषवदात (ऋषभदत्त) को परास्त किया था। इसकी पुष्टि गौतमी बलश्री के लेख से भी होती है। क्यों कि इस लेख मे गौतमी पुत्र शातकर्णी को सातवाहन कुल के यश को प्रतिष्ठित करने वाला तथा क्षहरात वंश को निरवशेष करने वाला भी कहा गया है। अतः इस प्रकार गौतमी बलश्री के लेख से शातकर्णी के इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

(C) गौतमी पुत्र शातकर्णी की साम्राज्य सीमाएँ :- इस लेख से हमें गौतमीपुत्र शातकर्णी की साम्राज्य की सीमाओं व उसके साम्राज्य का विस्तार की जानकारी प्राप्त होती है।

मंदर पवत सम सारस असिक - असक मुलक - सुरठ कुकुरापरांत अनुप विदर्भ - आकर अवंति राजस ॥

इस लेख मे गौतमी पुत्र शातकर्णी के साम्राज्य मे ऋषिक, अश्मक, मूलक विदर्भ, कुकुर, सुराष्ट्र, अपरांत, अनूप, तथा आकरवन्ति को बताया गया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि गौतमी पुत्र शातकर्णी का प्रत्यक्ष शासन दक्षिण मे कृष्णा से लेकर उत्तर मे मालवा एवं काठियावाड़ तक तथा प. मे कोकण से लेकर पूर्व मे बरार तक

विस्तृत थी। इसके अतिरिक्त गौतमी पुत्र शातकर्णी विन्ध्य के दक्षिण में स्थित समस्त दक्षिणापथ पर प्रभुत्व का दावा करता था। क्योंकि इस लेख में उसे न केवल विन्ध्य ऋक्षवत, पारियात्र, सह्य, मलय, महेन्द्र तथा दक्षिणापथ की अन्य पर्वत श्रेणियों का स्वामी बताया गया है। क्योंकि उसे अपनी सेना को तीनों समुद्रों का जल पिलाने का श्रेय भी दिया गया है। जिससे ज्ञात होता है उसका प्रभाव बंगाल की खाड़ी, अरब सागर हिन्द महासागर तक था।

② प्रशासनिक महत्व :- गौतमी बलश्री के गुहा-लेख का प्रशासनिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है। इस लेख से ज्ञात होता है कि गौतमी पुत्र शातकर्णी व उसके पुत्र वशिष्ठीपुत्र शातकर्णी ने कुछ समय के लिए साथ-2 शासन किया था इससे ज्ञात होता है कि शातकर्णी ने संयुक्त शासन किया था। इस गुफा में लिखा है कि गौतमी पुत्र शातकर्णी व उसकी माता दोनों ने संयुक्त रूप से दान दिया था। यह लेख वशिष्ठी पुत्र पुलमावि के शासन के 19 वे वर्ष का है। अतः इससे ज्ञात होता है कि गौतमी पुत्र शातकर्णी व पुलमावि ने साथ-2 शासन किया था इस अभिलेख में गौतमी बलश्री अपने को एक 'महाराज' (शातकर्णी) की माता व एक 'महाराज' (पुलमावि) की पितामही कहती है। जिससे ज्ञात होता है कि उन्होंने संयुक्त शासन किया था।

1st Choice

Page No.
Date / /

(3) आर्थिक महत्व :- गौतमी बलश्री के नासिक गुहालेख का आर्थिक दृष्टि से भी महत्व है। इस लेख से हमें सातवाहन काल की आर्थिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। इस अभिलेख में धर्मोपजित कर विनियोग करस का उल्लेख है जिसका आशय से ना नु लगाया है कि गौतमी पुत्र शातकर्णि ने न केवल धर्मशास्त्रों के अनुसार कर लगाया था बल्कि उसे प्राप्त धन को उसी प्रकार व्यय करता था अर्थात् गौतमी पुत्र ने धर्मशास्त्र के अनुरूप ही कर लगाया और कर से प्राप्त आय होनेवाली आय को इसी अनुरूप व्यय किया इससे ज्ञात होता है कि सातवाहन शासकों ने धर्मशास्त्रों के अनुसार ही कर लगाया था इस प्रकार इस लेख से आर्थिक जानकारी भी प्राप्त होती है

(4) धार्मिक महत्व :- गौतमी बल श्री के नासिक गुहा लेख का धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है। इस अभिलेख में कहा गया है कि शातकर्णि की माता गौतमी बलश्री द्वारा भद्रायनीय भिक्षुसंघ को एक गुहा तथा गुहा के निर्माण हेतु पुलमावि द्वारा "पिसाजिपदक" गांव दान में दिए थे। इससे ज्ञात होता है कि सातवाहन शासक धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु थे। वह ब्राह्मण होते हुए भी अन्य धर्मों का सम्मान करते थे। इसकी पुष्टि गौतमी बलश्री द्वारा भिक्षु संघ को गुहा-दान व गाँव दान में दी थी इससे ज्ञात होता है कि भिक्षु संघ के प्रति आस्था थी। अतः इस प्रकार गौतमी बलश्री के नासिक गुहा लेख का

Scanned by CamScanner

धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है।

(5) सामाजिक महत्व :- गौतमी बलश्री के नासिक गुहा-लेख का सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है। इस लेख से हमें तात्कालिन सामाजिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। इस लेख में वर्णित है कि गौतमी पुत्र शातकर्णी को शुभ दिनों में महोत्सवों व समाजों का आयोजन करने वाला कहा गया है। अतः उसने महोत्सव व समाज का आयोजन करवाया था। जिससे हमें तात्कालिन समाज में व्याप्त महोत्सव व उत्सव का ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार गौतमी बलश्री का नासिक गुहा लेख सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

(6) ऐतिहासिक महत्व :- गौतमी बलश्री का नासिक गुहालेख ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण लेख है। इस लेख से सातवाहन काल के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। इस लेख से हमें सातवाहनों की वंशावली प्राप्त होती है। जो सातवाहन काल का इतिहास जानने में महत्वपूर्ण है। इस लेख में गौतमी पुत्र शातकर्णी के शासन काल की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। उसके साम्राज्य की सीमा उसके द्वारा अर्जित की गई सफलताऐं तथा प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी इस लेख से प्राप्त होती है। जो सातवाहन काल का इतिहास जानने में महत्वपूर्ण है। अतः इस प्रकार सातवाहन काल के इतिहास जानने में गौतमी बलश्री के नासिक गुहा-लेख का महत्वपूर्ण स्थान है।

Scanned by CamScanner